REET 2025
LEVEL-1&2
वंदन बैच
संस्कृत
अलंकार
Part -2
LIVE
11-02-2025 03:00 PM

(लेवल 1 व 2 की भाषा द्वितीय के लिए)

अलंकार

- शब्दालंकार
  - अनुप्रास
  - यमक
  - श्लेष
- अर्थालंकार

अर्थालङ्कारः

उपमा

अस्य अलंकारस्य प्रयोगेण वस्तूनां, व्यक्तीनां वा घटनानां गुणाः, रूपाणि वा स्वभावाः अन्यस्य वस्तोः तुलनया सूचितानि भवन्ति। अस्य प्रयोगे तुलनायाः द्योतकवचनानि यथा "यथा", "इव", "समानं", इत्यादीनि उपयुज्यते।

उदाहरणम्: "रामः सिंह इव" — अस्य उपमानस्य द्वारा रामस्य वीर्यं, साहस्यम् इति सिंहस्य गुणाः दर्शिताः।

. "चन्द्रमा रजतवत्" — अत्र चन्द्रमस्य प्रकाशः रजतस्य समानतया वर्ण्यते।

. क्षीरसागरः अमृत इव अस्ति।

वाचक शब्द

चाँद सा रोशन चेहरा

उपमान — चाँद

वाचक शब्द — सा

साधारण धर्म — रोशन

उपमेय — चेहरा

ये झील सी नीली आंखें

क्रियागत सादृश्य-

क्षणात् प्रबोधमायाति लङ्घयते तमसा पुनः ।
निर्वास्यतः प्रदीपस्य शिखेव जरतो मतिः ।।

शिखा + इव

इस पद्य में 'आयाति' 'लङ्घयते' इन दोनों क्रिया पदों की उपमेय तथा उपमान में समानता है।

वृद्ध पुरुप की बुद्धि बुझते हुए दीपक की शिखा के समान क्षण भर में प्रबुद्ध हो जाती है और क्षण भर में अज्ञान से मन्द पड़ जाती है। यहाँ उपमेय वृद्ध पुरुष की बुद्धि उपमान दीप शिखा में 'प्रबुद्ध होना' तथा 'म्रन्द पड़ना' इन दोनों क्रियाओं की समानता है।

गुणगत समानता-

हरस्तु किञ्चत् परिलुप्तधैर्यश्चन्द्रोदयारम्भ इवाम्बुराशिः ।
उमामुखे विम्बफलाधरोष्ठे व्यापारयामास विलोचनानि ।।

यहाँ पर परिलुप्तधैर्य धर्म समुद्र तथा शिव दोनों में समान है, क्योंकि दोनों का धैर्य टूट गया।

इस पद्य में कामदेव के द्वारा भगवान् के ऊपर चलाए गए काम बाण से प्रभावित शिव का पार्वती के प्रति चेष्टा का वर्णन है। चन्द्रोदय के आरम्भ में समुद्र के समान शिव कुछ क्षुब्द होकर भगवान् शिव बिम्बफल के समान ओठों वाली पार्वती को देखने लगे।

उभगत (क्रिया तथागुणगत)

स्नपयति हृदयेशं स्नेह निष्यन्दिनी ते।
धवलवहलमुग्धा दुग्धकुल्येव दृष्टिः ॥ दुग्धकुल्या इव

यहाँ पर 'स्नपयति' यह क्रिया साम्य, स्नेह निष्यन्दिनी धवलबहलमुग्धा ये गुण साम्य है। उत्तरराम चरित में स्नेह पूर्वक राम को देखती हुई सखी की उक्ति है- दूध की नहर के समान स्नेह करने वाली शुभ तथा मनोहर तुम्हारी दृष्टि तुम्हारे हृदय के स्वामी प्रिय राम को स्नान करा रही है।

सञ्चारिणी दीपशिखेव रात्रौ, यं यं व्यतीयाय पतिंवरा सा।
नरेन्दमार्गाट्ट इव प्रपेदे विवर्णभावं स स भूमिपालः ।।

दीपशिखा + इव
इन्दुमति

इस पद्य में इन्दुमती उपमेय तथा दीपशिखा उपमान है विवर्णभाव समान धर्म है। 'इव' उपमानवाचक शब्द है। स्वयंवर में इन्दुमती दीप की शिखा की भाँति जिस-जिस राजा को छोड़कर आगे बढ़ जाती है वह वह राजा उसी प्रकार उदास हो जाता है जिस प्रकार राजा महल की सीढ़ियों के प्रकाश बुझ जाने पर अंधकार हो जाता है।

रूपकम्

तद्रूपकमभेदो य उपमानोपमेययोः। (मम्मटः)

जहाँ पर उपमान तथा उपमेय में अभेद प्रतीत होता है वहाँ रूपक अलङ्कार होता है।

वस्तुतः अभिन्न न होने पर अत्यन्त सादृश्य प्रदर्शन के लिए यहाँ आरोप किया जाता है।

उपमेय पर उपमान का आरोप

तुम्हारी आँखें झील

तुम्हारा चेहरा चाँद

पर्याप्तपुष्पस्तबक स्तनाभ्यः, स्फुरत्प्रवालोष्ठमनोहराभ्यः
लतावधूभ्यस्तर वो ऽप्यवापुर्विनम्र शाखाभुजबन्धनानि ॥

इस पद्य में लता को वधू, फूलों के गुच्छों को स्तन के रूप में अभेद रूप से वर्णन होने से रूपक अलङ्कार है।

कुमार सम्भव में शिव को लक्ष्य बनाकर कामदेव के द्वारा असमय में वसन्त के प्रादुभाव हो जाने पर वृक्षों में भी काम के उद्वेग का वर्णन है। वृक्षों ने भी अपनी झुकी हुई शाखा रूपी भुजाओं के द्वारा अत्यधिक पुष्पगुच्छरूपी स्तनों वाली, नूतन पल्लवरूपी ओठों से मनोहर लतारूपी वधुओं का आलिङ्गन किया गया।

उत्प्रेक्षा

संभाव...

सम्भावनमथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य संमेन यत्।

जहाँ पर उपमेय का उपमान के साथ तादात्म्य की सम्भावना दिखायी जाये उसे उत्प्रेक्षा अलङ्कार कहते हैं।

उत्प्रेक्षा अलंकार में उपमेय (जिसकी तुलना की जा रही है) और उपमान (जिससे तुलना की जा रही है) के बीच का संबंध पूर्ण निश्चितता नहीं बल्कि संभाव्यता, आशंका या अनुमान के भाव से प्रकट होता है। इसे व्यक्त करने के लिए ऐसे वाचक शब्दों का प्रयोग किया जाता है जैसे—

"मन्ये", "शङ्के", "ध्रुवम्", "प्रायः नूनम्" आदि, जो दर्शाते हैं कि तुलना में तादात्म्य तो है परन्तु वह पूर्णतया निहित या निश्चित नहीं। अर्थात्, इस अलंकार में तुलना का बोध कुछ हद तक संभाव्य (संभावनात्मक) रहता है।

मानो तुम्हारा मुख चांद है।

उदाहरण-

लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः।
असत्पुरुषसेवेव दृष्टिर्विफलता गता ॥

इस पद्य में अन्धकार का फैलाव (प्रसरण) में शरीर को ढकने की सम्भावना तथा अन्धकार को काजल की वर्षा की सम्भावना तथा असत्पुरुष सेवा की निष्फलता की तरह दृष्टि को निष्फल बताने के कारण उत्प्रेक्षा अलंकार है। अर्थ लगता है कि अन्धकार ने मेरे अङ्गों को ढक लिया है, आकाश से कज्जल की वर्षा हो रही है असाधु पुरुष की सेवा की तरह मेरी दृष्टि विफल हो गई।

व्यतिरेकः

उपमानाद् यदन्यस्य व्यतिरेकः स एव सः। (मम्मटः)

जहाँ पर उपमान से उपमेय को श्रेष्ठ बताया जाता है। या श्रेष्ठता दिखाई जाती है वहाँ व्यतिरेक अलंकार होता है।

दिशि मन्दायते तेजो दक्षिणस्यां रवेरपि।
तस्यामेव रघोः पाण्ड्याः प्रतापं न विषेहिरे ॥

इस पद्य में उपमानवाची सूर्य से उपमेयवाची रघु को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है अतः यहाँ व्यतिरेक अलङ्कार हैं।

अर्थ- दक्षिण दिशा में (दक्षिणायन में) जाते-जाते सूर्य का भी प्रभाव कम हो जाता है परन्तु इसी दिशा में पाण्ड्य देश के लोग राणा रघु के प्रताप को कम न कर सके।

सन्देहः

सन्देहः प्रकृतेऽन्यस्य संशयः प्रतिभोत्थितः ।
शुद्धो निश्चवगोंऽसौ निश्चयान्त इति त्रिधा ।।

इसके तीन भेद हैं- शुद्ध, निश्चयगर्भ तथा निश्चयान्त। यह निश्चयान्त का उदाहरण है।
जहाँ पर प्रतिभा के कारण प्रकृत विषय में अन्य विपय का संशय उत्पन्न होता है वहाँ सन्देह अलङ्कार होता है।

अयं मार्तण्डः किं ? सः खलु तुरगैः सप्तभिरितः,

कृशानुः किं? सर्वाः प्रसरति दिशां नैष नियतम्।

कृतान्तः किं ? साक्षान्महिषवह नो ऽसाविति चिरं,

समालोक्याजौ त्वां विदधति विकल्पान् प्रतिभटाः ॥

इस पद्य में एक ही व्यक्ति में सूर्य, अग्नि तथा यमराज के रूप में सन्देह होने के कारण यहाँ सन्देहलांकार है।

श्लोकार्थ- क्या यह सूर्य है? वह तो सात अश्वों से युक्त रथ से चलता है। क्या अग्नि है? यह तो सब ओर फैल रही है कहीं एक जगह स्थिर नहीं रहती। क्या यमराज है? उसका वाहन तो भैंस है। युद्ध में तुम्हें देख कर विपक्षी सेनाओं के मन में चिरकाल से अनेक प्रकार से सन्देह हो रहे हैं।

भ्रान्तिमान्

साम्यादतस्मिंस्तद्बुद्धिर्भ्रान्तिमान् प्रतिभोत्थितः ।

जो वस्तु नहीं है उसमें दूसरी वस्तु का ज्ञान होने पर भ्रान्तिमान अलङ्कार हो जाता है जैसे रस्सी में सर्प का ज्ञान।

भ्रमर।

पलाशमुकुलभ्रान्त्या शुकतुण्डे पतत्यलिः ।
सोऽपि जम्बूफलभ्रान्त्या तमलिं धत्तुं मिच्छति ।।

इस पद्य में भौरे को तोते की चोंच में पलाश पुष्प का भ्रम तथा तोते को भौर में जामुन फल के भ्रम होने के कारण यहाँ भ्रान्तिमान् अलङ्कार है। श्लोकार्थ- पलाश पुष्प की भ्रान्ति से भौंरा तोते की चोंच पर जा बैठा, वह तोता भी भौरे को जामुन फल समझकर उसे पकड़ना चाहता है।

निदर्शना

अभवन् वस्तुसम्बन्धः उपमापरिकल्पकः ।
निदर्शना भवेत् सेयं दण्डिना परिकीर्तिता।

जहाँ पर वस्तु सम्बन्ध की कल्पना नहीं हो सकती ही दण्डी के मत में वह निदर्शना अलङ्कार कहलाता है।

उदाहरण-

क्व सूर्यप्रभवो वंशः? क्व चाल्पविषया मतिः।
तितीषुर्दु स्तरं मोहादुडुपेनास्मि सागरम् ।।

कहाँ सूर्य वंश में उत्पत्र राजाओं के चरित्र का वर्णन और कहाँ अल्प विषयों के ज्ञाता इन दोनों में कोई उपमा नहीं हो सकती है। अतः यहाँ निदर्शना अलङ्कार है।

दृष्टान्त:

दृष्टान्तस्तु सधर्मस्य वस्तुन: प्रतिबिम्बनम्।

समान धर्म वाले वस्तु के बिम्य-प्रतिबिम्ब भाव को दृष्टान्त अलङ्कार कहते हैं।

त्वयि दृष्ट एव तस्या निर्वाति, मनो मनोभवज्वलितम् ।
आलोके हि हिमांशोर्विकसति कुसुमं कुमुद्रवत्या: ।।

इस पद्य में चन्द्रमा के प्रकाश से कुमुदिनी पुष्प के खिलने का दृष्टान्त नायक के देखने पर नायिका के प्रसन्न होने के साथ दिखाया गया है। अत: परस्पर बिम्ब प्रतिविम्व भाव होने के कारण यहाँ दृष्टान्त अलंकार है।

श्लोकार्थ- तुम्हें (नायक को) देखने मात्र से काम की ज्वाला से व्याकुल उसका (नायिका) मन उसी प्रकार शान्त हो गया जिस प्रकार चन्द्रमा के प्रकाश को देखने मात्र से कुमुदिनी पुष्प खिल उठता है।

अर्थान्तरन्यासः

सामान्यं वा विशेषो वा तदन्येन समर्थ्यते।

यत्र सोऽर्थान्तरन्यासः साधर्म्येणेतरेण वा ।।

जहाँ पर सामान्य अथवा विशेष का अन्य किसी साधर्म्य या वैधर्म्य के साथ समर्थन किया जाता है वहाँ अर्थान्तरन्यास कहलाता है।

शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखिवृत्तितं सपत्नीजने,
भर्तुर्विप्रकृतापि रोषणतया मा स्म प्रतीपं गमः।
भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने भाग्येष्वनुत्सेकिनी,
वान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो वामा कुलस्याधयः ॥

कण्व → शकुन्तला

इस पद्य में अच्छी गृहिणी के चरित्र का उपदेश किया गया है तथा इससे वैधर्म्य अर्थात् असमान आचरणों वाली स्त्री को कुल की व्यथा बताई गयी है।

श्लोकार्थ - यहाँ पति गृह जाती हुई शकुन्तला के प्रति ऋषि कण्व का उपदेश वाक्य है- हे शकुन्तले। तू बड़ों की सेवा करना, अपनी सौतन के साथ प्रिय सहेली की तरह व्यवहार करना, कोप के कारण पति के विपरीत होने पर तू उनसे विपरीत मत होगा, परिवार के लोगों के प्रति उदारता की भावना रखना, दूसरों से सम्मान मिलने पर विनम्र रहना, इस प्रकार आचरण करने वाली स्त्री गृह लक्ष्मी कहलाती है, परन्तु इसके विपरीत स्वभाव वाली स्त्रियाँ तो कुल की व्यथा बन जाती हैं।

16 फरवरी
संस्कृत
Theory marathon

वाच्य, अनुवाद, अशुद्धि संशोधन;